रात्रिक्लास 26/6/68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

गार्डन ऑफ अल्लाह बनना है। गार्डेन ऑफ फ्लॉवर, फारेस्ट ऑफ शैतान कहते हैं ना। डेविल आसुरी सम्प्र0 भ्रष्टाचारी। यह अक्षर सभी एक के होते है; परन्तु यह तुम ही समझते हो। भ्रष्टाचारी किसको, श्रेष्ठाचारी किसको कहा जाता है। यह सिर्फ तुम जानते हो। पहले कुछ भी नहीं जानते थे। जंगली जनावर थे। इस पढ़ाई और उस पढ़ाई में रात–दिन का फर्क है। हम अपने गवर्मेन्ट स्थापन कर रहे हैं। यह समझते जाओ। तुम युक्ति से बखमल का पादर लगा सकते हो। कह सकते हो। अन्दर में पक्का करते रहो। पाण्डव और कौरव नाम तो है ना। तुम पण्डे रास्ता बताते हो। शान्तिधाम ले जाते हो। सच्ची यात्रा वह है। तीर्थ में मनुष्य पवित्र बनने जाते हैं। गंगा स्नान करते हैं, अमृत पीते हैं। बच्चे बाप को याद करने का भी पुरुषार्थ करते रहते हैं। बच्चे सर्विस करके आये हैं। तुम ईश्वरीय सर्विस जानते हो। जिन2 का पार्ट है वह ईश्वरीय सर्विस में लगे ही रहते हैं। आगे व(च)ल कर तुम देखेंगे सर्विस में खुशी से मदद करते रहेंगे। बाप आकर बच्चों को धीर्य(धैर्य) देते हैं। समझते हो सुख दुःख का खेल है। बाप संगम पर ही आते हैं। बाप आकर सभी को सुखधाम–शान्तिधाम का मालिक बनाते हैं। ड्रामा के राज़ को भी तुम जानते हो। कहते हैं 3000 वर्ष पहले दुनिया पैराडाइज थी; परन्तु वन्डर है भारतवासियों ने इतने बड़े गपोड़े बैठ लगाये हैं। फिर सच्चाई सिद्ध होती रहेगी। वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉगराफी फिर रिपीट होती रहेगी। तुम्हारे दिल में है हम चके(चक्र) कैसे लगाते हैं। फिर यह ज्ञान सतयुग में नहीं होगा। वहाँ न ज्ञान है न भक्ति होती। ज्ञान का फल है। ज्ञान मिलता ही है संगम पर। तो अभी बाप बच्चों को आप समान बना रहे हैं। जो जो ब्राह्मण बनते हैं, यह है हाईएस्ट पोजीशन तुम्हारा। देवताओं से भी हाईएस्ट। यह तो क्लीयर है। तुम समझते हो हम एक्टर्स हैं। एक भी एक्टर निकल नहीं सकता। जितनी भी संख्या है। यह भी समझते हैं सतयुग में बहुत ही थोड़े मनुष्य होते हैं। सतयुग आदि में क्या होगा। फिर भी राजधानी है ना। पहले यह होंगे इनकी प्रजा भी होगी फिर वृद्धि को पाते हैं। आगे चलकर तुम देखेंगे क्या होता है। मीठे2 बच्चों को नॉलेज बहुत ही अच्छी मिल रही है। जो समझते जाते हैं वृद्धि को पाते जाते हैं। भल और कुछ न समझे। भगवान तो कहते हैं ना। जानते हो वह निराकार है। हम भी निराकार थे। बाबा भी निराकार। फिर यहाँ आकर पार्ट बजाते हैं। बोलो, यह नॉलेज तुमको और कहाँ भी नहीं मिलेगा। यह दिव्य–दृष्टि ... बनाई है। हम जो जट पत्थर बुद्धि थे। यह ब्रह्मा भी पत्थर बुद्धि था। इनमें बाबा न प्रवेश किया है फिर पारस बुद्धि बनना है। हर्जा नहीं है कहने में। श्री श्री 108 तो यह है ना; परन्तु हम कहते थोड़े ही हैं। सच्च तो सच्च है लिखने की क्या दरकार है। तुम पढ़ते रहते हो, जानते हो। तुम बच्चों की बुद्धि में रहना है शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। शिवबाबा को ही याद करना है। जास्ती तो कुछ नहीं। बच्चों को यही पक्का कराओ। अबलाएँ हैं। सिर्फ शिवबाबा को याद करो। दैवीगुण धारण करो तो तुम विश्व के मालिक बन जावेंगे। बाप धीर्य देते हैं। 21 तो क्या 40–50 जन्म कुछ भी दुःख नहीं। कितना काल का डर रहता है। वहाँ काल को आने का हुकुम ही नहीं है। खुशी से गर्भ में जावेंगे। बाबा को खुशी है ना शरीर छोड़ जाकर बच्चा बनूँगा। खुशी में खगियाँ मारनी चाहिए बच्चों को। ब्राह्मण है सबसे ऊँच; क्योंकि बाप पढ़ाते हैं। तो वह नशा होना चाहिए। बाप आकर आज्ञाकारी सर्वेन्ट बना है तब तो नमस्ते करते हैं ना बच्चों को। बच्चों के आगे बाप बड़ाई क्या दिखावेंगे। कितनी बड़ी स्थापना होती है। शिवबाबा को फिकरात होगी। इनका सत बाबा के साथ कितना नजदीक में संग है। अनेक बार यह स्थापना का कार्य किया है उनके संग में यह भी समझते हैं यह तो कॉमन बात है। जैसे कल्प पहले स्थापना हुई थी, जो विघ्न आदि पड़े थे वह पड़ेंगे। साक्षी हो देखना है। बाप के श्रीमत पर चलना है। बाप को फॉलो करो। बाप कहते हैं मेरे को फॉलो याद से करना है। बाकी एक्टिवटी से जैसे यह कर्म करते हैं उनको फॉलो करो। यह बाबा तो कब किसको गुस्सा करता नहीं। मारता नहीं। प्यार से समझाते रहते हैं। सदैव बच्चे 2 ही अक्षर मुख से निकलता रहता है। बच्चों को शिक्षा भी देनी है। अच्छा बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।